सामाजिक संस्था संपूर्णा
(गैर सरकारी संगठन)
संपूर्ण विकास की ओर अग्रसर

आलेख

किसी ने सच ही कहा है कि एक बालिका को शिक्षित करो तो पूरा परिवार शिक्षित होता है

–डॉ शोभा विजेंद्र
संपूर्णा संस्थापिका

कोरोना काल खण्ड में जब सभी लोग लॉक डाउन के कारण घरों में बंद हैं तब आज दिल्ली की सड़कों पर शराब लेने आए हुए युवकों और बुजुर्गों का हाल देखकर आंखें शर्म से झुक गई। चारों तरफ कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण भय का वातावरण है। 40 दिन का लॉक डाउन पूरा हुआ। और थोड़ी सी रियायत देकर सरकार किसी अति आवश्यक कार्य को रोकना नहीं चाहती थी, किंतु शायद किसी को भी ये समझ नहीं आया कि किस प्रकार शराब के लिए सारी सीमाएं लाघंकर लोग सुबह 06 बजे से सड़कों पर आ गये। आश्चर्य तो तब हुआ कि जब दोपहर 12 बजे भोजन की लंबी कतारों से पुरूष गायब थे। पहले तो मैं कुछ समझ ही न पायी कि आज भोजन लेने के लिए पुरूषों की संख्या इतनी कम क्यों है, किंतु जब टीवी के माध्यम से शराब लेने के लिए लंबी–लंबी कतारों में लगे पुरूषों को देखा तो काफी हद तक बात समझ में आ गई।

मेरा आप सभी से यह भी अनुरोध है कि इस बात को किसी विशेष वर्ग से न जोड़ें क्योंकि लोगों ने मुझे यह भी बताया है कि किस प्रकार से बड़े–बड़े घरों के लोग भी कोई भी दाम देकर शराब की बोतलें खरीद रहे हैं। मेरे पास इस समय कोई आंकड़ा तो नहीं है परंतु मैं दावे से कह सकती हूं कि ये जो माएं भोजन के लिए पंक्ति में लगी हुई हैं वो न केवल इस विपत्ति काल में भी न केवल अपने बच्चों बल्कि अपने शराबी पतियों का भी पेट पाल रही हैं।

ये कैसी विडम्बना है कि स्त्री जब कमाती है तो उसका एक–एक पैसा घर की जरूरतों को पूरा करने में लगता है लेकिन पुरूष जब कमाता है और गंदी आदतों का शिकार होता है तो अपनी आमदनी का सबसे बड़ा और पहला भाग अपने व्यसनों पर लगाता है।

बात फिर वहीं आ जाती है मैं तो कहूंगी कि बचपन से ही पैदा होते ही हर मां को चाहिए कि अपने पुत्रों को लाड़, प्यार और दुलार के साथ–साथ कर्तव्य बोध का अहसास और स्त्री सम्मान शुरू से ही सिखाएं अन्यथा इतिहास कलयुग में महिलाओं की दुर्दशा के लिए महिलाओं को ही जिम्मेदार बताएगा।

.....